डिलन के प्यार में दीवाने

रूमा दासगुप्ता

पूर्वी भारत के शहरी संगीत परिदृश्य पर अमेरिकी गायक का जादू

अप्रैल में जब अमेरिकी गीतकार और संगीतकार बॉब डिलन लेखन और फोटोग्राफी के लिए अमेरिका का सर्वोच्च पुरस्कार पुलित्ज़र प्राइज़ पाने वाले पहले रॉक एंड रोल कलाकार बने तो शायद उन्हें इस बात का आभास भी न रहा हो कि भारत के पूर्वी छोर पर कई लोगों के लिए यह उनके जीवन की बेहद गौरवशाली घटना थी। पुरस्कार की घोषणा करते हुए कहा गया कि 66 वर्षीय डिलन को यह विशेष पुलित्ज़र प्राइज़ अद्भुत काव्यात्मक शक्ति वाली गीतात्मक संगीत रचनाओं के माध्यम से ''लोकप्रिय संगीत और अमेरिकी संस्कृति पर उनके गहन प्रभाव'' को सम्मानित करते हुए दिया गया है। पुलित्ज़र पुरस्कार तय करने वाली समिति को शायद पता नहीं कि डिलन ने भारत में भी, और विशेष रूप से कोलकाता और शिलांग में, शहरी संगीत के परिदृश्य और सामाजिक-राजनीतिक चेतना पर भी अमिट प्रभाव छोड़ा है।

डिलन ने खुद को पुलित्ज़र प्राइज़ मिलने को लेकर कोई टिप्पणी नहीं की है। सच तो यह है कि वह सार्वजनिक बयान कम ही जारी करते हैं। कोलकाता, पश्चिम बंगाल ने डिलन को नायक के रूप में अपनाया है। विरोध की इस नगरी में वह प्रतिरोधकारियों की दो पीढ़ियों के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। उन्होंने अपने संसारव्यापी लोकप्रिय लोकगीत 'ब्लोइन इन द विंड' को खास बांगला उच्चारण के साथ गाते, राजनीतिक और सामाजिक न्याय के लिए आवाजें उठाते, कंक्रीट और धूल रौंदते लोगों को भले ही न सुना हो, वह कोलकाता के संगीत जगत का निर्विवाद अंग हैं। और वह शायद ''शिलांग के डिलन'' के रूप में प्रसिद्ध लू माजॉ पर फ़िल्मकार रंजन पालित की डॉक्यूमेंटरी फ़िल्म भी न देखें या अपने गीतों के अंजन दत्त द्वारा किए गए बांग्ला रूपान्तरण भी न देखें।

यह बड़ी विरोधाभासी सी बात है कि संसार का सबसे प्रसिद्ध व्यवस्था विरोधी संगीतकार औपचारिक अध्ययनों का विषय बने। पिछले सात साल से कोलकाता के जादवपुर विश्वविद्यालय में 'लिट्रेचर एंड द अदर आर्ट्स' के पर्चे में डिलन के तीन सबसे प्रतिनिधि गीत पढ़ाए जा रहे हैं। फ़ुलब्राइट फ़ेलो और अंग्रेजी विभाग के प्रमुख आनन्द लाल के प्रयासों से स्नातक और स्नातकोत्तर स्तरों पर अपरम्परागत साहित्य का अध्यापन सम्भव हो पाया है। डिलन की कविताओं 'विद गॉड ऑन अवर साइड', 'मिस्टर टैम्बूरीन मैन' और 'लाइक ए रोलिंग स्टोन' का चुनाव भी उन्होंने किया है।

लाल गर्व से कहते हैं, ''मेरे छात्र संगीत की इस धारा से परिचित हैं, उन्होंने पिछली पीढ़ी से 60 और 70 के दशकों की रूमानियत की समझदारी पाई है। वह जानते हैं कि डिलन के तीन नवीनतम एल्बम क्लासिक हैं।'' साथ ही वह डिलन से नाराज भी हैं कि उन्होंने अपने संगीत को अंतर्वस्त्रों के विज्ञापन के लिए इस्तेमाल करने दिया। जाहिर

लेखक मार्क ए. यू. ब्लाकस्टोन्स/ग्रेट ऐ ऐ मेमोरियल ट्रस्ट © मार्क ए. यू. ब्लाकस्टोन्स

डिलन डेज़

हर मई में बॉब डिलन के सैकड़ों प्रशंसक मिनेसोटा के हिब्बिंग कस्बे में आयोजित होने वाले 'डिलन डेज़' समारोह के लिए जमा होते हैं। 24 मई के आसपास आयोजित किए जाने वाले इस उत्सव में डिलन के संगीत की प्रस्तुतियों के अलावा गायन, गीत लेखन, कविता, कहानी, नाट्य लेखन और कला प्रतियोगिताएं भी होती हैं। इस साल के आयोजन की विशेषता होगी पास ही स्थित चिशॉम कस्बे के आयरन वर्ल्ड संग्रहालय में लगने वाली लौह अयस्क खनन के लिए प्रसिद्ध इस क्षेत्र में बीते डिलन के बचपन पर केंद्रित एक प्रदर्शनी।

डिलन डेज़ की शुरुआत 1991 में ज़िम्मीज़ बार एंड रेस्तरां में कुछ स्वत:स्फूर्त संगीत प्रस्तुतियों से हुई थी। इस रेस्तरां का नाम डिलन के असली कुलनाम ज़िम्मरमैन पर रखा गया है।

http://www.dylandays.com/index.htm

लॉस एंजिलिस, कैलिफ़ोर्निया में 2002 में ग्रैमी पुरस्कार समारोह के दौरान क्राई ए व्हाइल गीत पर अपनी प्रस्तुति देते हुए बॉब डिलन।

ग्रेगरी हार्वे/ग्रेट ऐ ऐ मेमोरियल ट्रस्ट © मार्क ए. यू. ब्लाकस्टोन्स

फोटो: बेन प्रसाद

लू माजॉ ने वर्ष 1972 में बॉब डिलन का जन्मदिन मनाने की शिलांग की संगीत परंपरा को शुरू किया।

है कि डिलन का उत्तर-आधुनिकीकरण उन्हें रास नहीं आ रहा!

डिलन के साहित्यिक विकास पर पैनी निगाह रखने वाले लाल पाते हैं कि उनकी संगीत रचनाओं में पहले दिखने वाली ''बिम्बों की बौछार'' को देखते हुए अब उनकी रचनाएं खासी अलंकरणहीन हैं। उन्हें लगता है कि शब्दों के चुनाव और अलंकरणहीनता के मामले में डिलन आयरिश नाटककार सैमुएल बैकेट की याद दिलाते हैं।

कुछ लोगों को डिलन में बांग्ला कवि जीबानन्द दास की झलक दिखती है। अब मुंबई में काम कर रहे कोलकाता के फ़िल्मकार गौरव पांडे कहते हैं, ''डिलन वह सब हैं जो बीट्ल्स कभी नहीं रहे... उनकी आवाज़ कभी सुरीली नहीं थी।'' मधुरता की यही अनुपस्थिति पांडे को डिलन की तुलना मूर्तिभंजक जीबानन्द बाबू से करने को मज़बूर करती है।

''लेकिन उनके घुमन्तू गायक से रिकॉर्डिंग आर्टिस्ट बनने से हम खुद को ठगा सा महसूस करते हैं।'' डिलन के वामपंथी झुकाव वाले बुद्धिजीवी बंगाली प्रशंसकों की भावनाओं को व्यक्त करते हुए पांडे शिकायत करते हैं।

जादवपुर विश्वविद्यालय में डिलन पर पर्चे लिखने वाले छात्रों के विपरीत झंडे लहराते और गंगा के मैदानी इलाकों के सवालों के जवाब तलाशते राजनीतिक कार्यकर्ता कभी न भूले जा सकने वाले ब्लोइन इन द विंड के रचियता और अमेरिका के प्रसिद्ध विद्रोही गीतकार की अन्य रचनाओं से अपरिचित ही हैं। इनमें अधिकांश ने 'द टाइम्स दे आर अ चेंजिन' या 'मास्टर्स ऑफ़ वार' सुने तक नहीं हैं। और शायद यही डिलन की महान सफलता का प्रमाण है कि उनका लिखा और गाया एक ही गीत संसार के एक से लेकर दूसरे कोने तक इतना लोकप्रिय हो जहां मीडिया द्वारा रची और प्रचारित उनकी स्टार छवि की भनक भी नहीं पहुंची है।

आज डिलन 40 बरस पहले की तुलना में कहीं अधिक लाइव शो करते हैं और उनके दीवाने बारह-बारह घंटे कतारों में खड़े रहकर उनके लाइव शो के टिकट खरीदते हैं।

भारत के डिलन कहे जा सकने वाले लू माजॉ भी लोकप्रियता की दौड़ में पीछे नहीं हैं। इस उत्साही संगीतकार ने 1972 में डिलन के जन्मदिवस (24 मई) पर शिलांग के एक साधारण से हॉल में संगीत की प्रस्तुति कर एक स्थानीय संगीत समारोह की शुरुआत की। आज देशभर में श्रोता और संगीतकार इस समारोह का आनन्द उठाने के लिए शिलांग में जमा होते हैं। 'एस ऑफ़ स्पेड्स' नाम के बैंड के तले माजॉ, नंदन बागची, लॉ हिल्ट, अमित दत्ता और अर्जुन सेन जैसे कलाकार संगीत की ज़बर्दस्त प्रस्तुतियां देते हैं।

ड्रमवादक नंदन बागची याद करते हैं कि 70 और 80 के दशकों में कोलकाता के संगीतप्रेमी विदेशों से आए मित्रों तथा परिचितों के कैसटों से बॉब डिलन के संगीत की प्रतिलिपियां तैयार करके सुनते थे क्योंकि तब डिलन का संगीत यहां उपलब्ध ही नहीं था। उन दिनों भारत और विशेष रूप से बंगाल में व्यवस्था विरोध की जो लहर चल रही थी, उसके कारण भी डिलन के संगीत की लोकप्रियता बढ़ी। आज तो खैर शहर के म्यूज़िक स्टोरों में डिलन के संगीत की ठीकठाक बिक्री होती है।

लहराते धवल केशों वाले माजॉ कहते हैं, ''डिलन के गीतों ने मेरे जीवन को प्रकाशित किया, उसे अर्थ दिया।'' वर्ष 1972 में डिलन के जन्मदिन पर उन्हें अपनी कृतज्ञता अर्पित करने के लिए संगीत समारोह का आयोजन करते हुए लू माजॉ यह नहीं जानते थे कि वह शिलांग में डिलन को एक देवता की तरह स्थापित कर रहे हैं।

हाल ही में माजॉ पर एक डॉक्यूमेंटरी फिल्म पूरी करने वाले रंजन पालित कहते हैं,''माजॉ खुद भी आला दर्ज़े के रॉक कलाकार हैं।'' पालित भी डिलन के भक्त हैं, शूटिंग पूरी होने के बाद वह गिटार पर डिलन का संगीत बजाकर अपने सहयोगियों का मनोरंजन करते हैं। उनकी फ़िल्म पूरी हो चुकी है और अब उनके लिए हर साल शिलांग जाना बिल्कुल भी ज़रूरी नहीं है लेकिन वह इस साल भी वहां लौटने की योजना बना रहे हैं ,''वहां जाना किसी तीर्थयात्रा जैसा सुखद है।''

माजॉ के अलावा भी शिलांग में डिलन के संगीत के रसिकों की बहुत कद्र होती है। बंगाली रॉक गायक और फ़िल्मकार अंजन दत्त और उनके बेटे नील यहां डिलन की लोकप्रिय बंदिशें 'ए हार्ड रेन्स अ-गॉना फॉल', 'द टाइम्स दे आर अ चेंजिन' गा चुके हैं तो दो साल पहले नई दिल्ली की लिज़ कॉटन नें 'आई शैल बी रिलीज़्ड' और 'मोजाम्बीक' की प्रस्तुति से श्रोताओं को विभोर कर दिया।

26 अक्टूबर 2007 को शिलांग में 1730 गिटार वादकों ने 'नॉकिन ऑन हेवन्स डोर' बजाकर डिलन के संगीत के प्रेमी मेघालय वासियों का दिल जीत लिया। यह आयोजन 2006 में कैन्सस सिटी, मिज़ूरी में 2006 में 1721 संगीतकारों द्वारा 'डीप पर्पल स्मोक ऑन द वाटर' बजा कर गिनेस बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स में दर्ज़ रिकॉर्ड तोड़ने के प्रयास के लिए किया गया था।

और इस बरस भी कोलकाता वालों को डिलन के जन्मदिन समारोह का खास तौर पर इंतज़ार रहा।

फोटो: रंजन पालित

शिलांग, मेघालय में गिटारवादक डिलन के नॉकिन हेवन्स डोर पर अपनी सामूहिक प्रस्तुति देते हुए। 26 अक्टूबर 2007 को हुआ यह आयोजन सबसे बड़े गिटारवादन समूह श्रेणी में गिनेज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में जगह बनाने की कोशिश थी।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

बॉब डिलन

www.bobdylan.com/

बॉब डिलन का सम्मान- भारतीय शैली

http://news.bbc.co.uk/1/hi/world/south_asia/5016926.stm

बॉब डिलन के वीडियो

http://www.youtube.com/results?search_query=Bob+dylan

रूमा दासगुप्ता *स्वतंत्र पत्रकार और संप्रेषण सलाहकार हैं और कोलकाता में रहती हैं।*

बंगाली मध्य वर्ग के बीच डिलन

बॉब डिलन को लू माजॉ ने शिलांग की पहाड़ियों में परिचित नाम बना दिया तो अंजन दत्त ने उन्हें पश्चिम बंगाल में घर-घर में पहुंचा दिया। अंजन ने डिलन के गीतों की बांग्ला में पुनर्रचना करके विद्रोही गीतकार के क्रोध और क्षोभ को बंगाल की माटी में रोप दिया।

पत्रकार से विज्ञापन लेखक, थियेटर निर्देशक, फ़िल्मकार और अभिनेता बने अंजन अमेरिकी डिलन के बांग्ला अवतार की सफलता का कारण कुछ यूं बताते हैं,''मेरा लक्ष्य वर्ग बंगाली मध्य वर्ग है। हर बंगाली की साहित्य में पैठ है और वह शब्दों के अर्थ समझता है।''

दार्जिलिंग के अपने स्कूल में एल्विस प्रेस्ली और बीट्ल्स के संगीत की खुराक पर पले-बढ़े अंजन को शुरू में डिलन की खुरदुरी आवाज़ ने आकर्षित किया। वह याद करते हैं, ''मैं 16 बरस का था और डिलन ने मेरे लिए संगीत के मायने बदल दिए। रवीन्द्र संगीत और 50 के दशक के हिट फिल्मी संगीत की परम्परा के उस दौर में गीतकार-गायक एक नई अवधारणा था।''

गीतों की सशक्तता और गायक की अपरम्परागत आवाज़ से भी अधिक अंजन को आकर्षित किया था गीतों की बौद्धिक गुणवत्ता ने। 80 के दशक में एक कामचलाऊ गिटार पर 'इट एंट मी बेब' गुनगुनाते अनौपचारिक पार्टियों में मित्रों का दिल बहलाते अंजन ने सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन वह ''वैकल्पिक'' गायक के रूप में स्थापित होंगे।

अंजन ने हाल ही में अपने बेटे नील के साथ गाए डिलन के गीतों के बांग्ला संस्करण की एल्बम ''आमि आर गोदो'' जारी किया है। 50 पार कर चुके अंजन अब रॉक स्टार की तरह आधी रात को भी काला चश्मा पहने कोलकाता के मशहूर पब और रॉक संगीत केंद्र समप्लेस एल्ज में बॉब डिलन के गीत गाते हैं।

वह डिलन के संगीत के अपने संस्करण को लॉस एंजिलिस, सैन डिएगो, सैन फ्रांसिस्को, न्यू जर्सी और बोस्टन के प्रवासी बंगालियों के लिए भी प्रस्तुत कर चुके हैं। ''नॉकिन ऑन हेवन्स डोर'' का उनका संस्करण अमेरिका के इस श्रोता वर्ग में बहुत लोकप्रिय रहा है।

आज अंजन को डिलन की जो विशेषता आकर्षित करती है वह है खुद को बार-बार पुनर्आविष्कृत करने का उनका साहस। उन्हें विरह की तड़प वाले डिलन के प्रेमगीत खासतौर से पसन्द हैं।

इस साल भी दत्त और उनका बेटा डिलन के जन्मदिन पर उन्हें संगीतांजलि अर्पित करने के लिए फ़िल्म निर्माण के व्यस्तता भरे कार्यक्रम से कुछ समय चुरा ही लेंगे। -रू.दा.

फोटो: रंजन पालित

अंजन दत्त